पुनर्जन्म का रहस्य

पुनर्जन्म का विषय इतना जटिल एवं गूढ़ है कि इसकी तथ्यपूर्ण वैज्ञानिक व्याख्या अभी तक किसी स्तर पर नहीं की जा सकी है । इसके अतिरिक्त पुनर्जन्म के बारे में विभिन्न धर्मों में भिन्न-भिन्न अवधारणायें एवं व्यवस्था होने के कारण इस विषय पर कोई एक सहज स्पष्टीकरण जनसाधारण को भी मान्य नहीं होगा। आज के वैज्ञानिक युग में नित नई-नई एवं तथ्यपूर्ण वैज्ञानिक खोजें हमारे सामने आ रही हैं तथा मानव चाँद एवं मंगल ग्रह की जानकारियां एकत्रित कर रहा है। एक समय था कि इस बारे में कोई कल्पना भी नहीं की जा सकती थी तथा "पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाती है सूर्य पृथ्वी के नहीं", इस सच को जनता के सामने लाने पर कुछ धर्मान्ध लोगों ने वैज्ञानिक जगत को नयी चेतना एवं सोच देने वाले वैज्ञानिकों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार करते हुए उन्हें मौत के घाट उतार दिया था। अब वह समय गुजर चुका है तथा नई पीढ़ी वास्तविक सच जानने के लिये उत्सुक रहती है तथा तथ्यों को विज्ञान की कसौटी पर ही जांचा परखा जाता है। अतः अब हम यह साहस कर सकते हैं कि पुनर्जन्म के बारे में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हुए इसकी व्याख्या की जाये।

पुनर्जन्म के बारे मे विभिन्न धर्मों में अलग-अलग ढंग से व्यवस्था देने के साथ-साथ वास्तविक एवं व्यवहारिक जीवन में ऐसे अनेक उदाहरण एवं समाचार सुनने, पढ़ने एवं प्रत्यक्ष रुप में देखे को मिलते हैं जिसमें किसी व्यक्ति विशेष द्वारा दूसरा जन्म लेने की बात सामने आती है तथा जब दोबारा जन्म लेने वाला व्यक्ति अपने पूर्व जन्म के बारे में, जो भी सूचनायें देता है वह बिल्कुल सही पायी जाती हैं। यही नहीं वह व्यक्ति (प्रत्यक्ष रुप में अभी एक छोटा सा बच्चा ही) जिन लोगों से अपने दूसरे जीवन में कभी मिला ही नहीं होता है तथा साधारणतः वे उसके लिये अनजान होने चाहिये उनको वह न केवल पहचान लेता है बल्कि उनके साथ अपने पुराने संबंधों एवं घटनाओं का पूर्ण विवरण प्रस्तुत कर देता है जिससे सहज ही यह विश्वास हो जाता है कि वास्तव में वही पुराना व्यक्ति मृत्यु के बाद दोबारा अवतरित हुआ है। पुनर्जन्म को समझने के लिये केवल उपरोक्त संदर्भित तथ्य ही काफी नहीं हैं बल्कि इसके लिये इससे संबंधित सभी पहलुओं पर विचार करने की आवश्यकता है। अतः आइये पहले पुनर्जन्म के संबंध में जो तथ्य सामने आये हैं तथा जिनके आधार पर हम यह मानते है कि पुनर्जन्म होता है उससे संबंधित आंकड़े एवं सूचनाओं पर एक दृष्टि डालें। पुनर्जन्म के संबंध में निम्न लिखित तथ्य सामने आये हैं ।

1. पुनर्जन्म लेने से संबंधित जितनी भी घटनायें सामने आती है यदि उनके घटने की मृत्यु दर के साथ तुलना की जाये तो वह करोड़ों व्यक्तियों पर एक से भी कम आती है, अर्थात सभी मरने वाले पुनः जन्म लेते दिखायी नहीं देते हैं तथा पुनर्जन्म की घटनाओं का प्रतिशत नगण्य हैं (प्रतिशत किसी भी दृष्टि से गणना के योग्य नहीं है) ।

2. पुनर्जन्म की जितनीं भी घटनायें अब तक सामने आयीं हैं उनमें से यह तथ्य सामने आता है कि पुनर्जन्म केवल उन्हीं लोगों का होता है जोकि अपनी प्राकृतिक मृत्यु से पूर्व ही किसी कारणवश अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। यहां प्राकृतिक मृत्यु का मतलब उस मौत से है जबकि इन्सान अपनी वृद्धावस्था को प्राप्त कर लेता है तथा वृद्ध होने के कारण विभिन्न प्राकृतिक कारणों से मृत्यु को प्राप्त होता है।

3. अकाल मृत्यु होने वालों के पुनर्जन्म की भी घटनायें शत -प्रतिशत होती नहीं देखी गयी हैं तथा इनका भी यदि प्रतिशत निकाला जाये तो वह भी नगण्य ही आता है।

डा. भीष्म कुमार, वैज्ञानिक "ई"

4. पुनर्जन्म लेने वाला बच्चा थोड़ा बड़ा होने पर, जब कुछ बोलने एवं समझने लायक हो जाता है तब वह अपने पूर्वजन्म के बारे में बताना शुरु कर देता है लेकिन साधारणतः यह देखा गया है कि वही बच्चा कुछ वर्षो के बाद पुनर्जन्म से संबंधित बातों को धीमे-धीमे भूल जाता है तथा उसको फिर अपने पुनर्जन्म के बारे में याद नहीं रहता है हांलाकि ऐसे कई प्रकरण भी सामने आये हैं जिनमें पुनर्जन्म लेने वालों को पूर्व जन्म की बातें काफी लम्बे समय तक भी याद बनी रही हैं।

5. पुनर्जन्म के जितने भी प्रकरण सामने आये हैं उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि पुनर्जन्म में लिंग परिवर्तन होते नहीं देखा गया है अर्थात जो पहले स्त्रीलिंग में था उसने पुनर्जन्म भी स्त्रीलिंग में ही लिया तथा जो पुलिंग में था उसने पुनर्जन्म भी पुलिंग में पाया।

6. जो मनुष्य अपनी अधिक उम्र में अकाल मृत्यु के बाद पुनर्जन्म लेता है वह अपने जीवन के शुरु की अवधि (बाल्यकाल) की तुलना में अपनी बाद वाली अवस्थाओं से संबंधित घटनाओं के बारे में अधिक बता पाता है अर्थात वह अपने बाल्यकाल या उसके आस पास के जीवन से संबंधित घटित घटनाओं की जानकारी को अपने नये जीवन में प्राप्त नहीं करता है। दूसरे शब्दों में यदि कोई बच्चा अपने बाल्यकाल में ही अकाल मृत्यु को प्राप्त होकर पुनर्जन्म लेता है तो वह अपने बाल्यकाल की घटनाओं का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है जबकि अधेड़ उम्र का व्यक्ति पुनर्जन्म लेने पर बाल्यकाल की घटनाओं के बारे में नहीं बता पाता है।

उपरोक्त तथ्यों की क्रमवार वैज्ञानिक व्याख्या करने से पहले आइये, कुछ प्राकृतिक शक्तियों एवं वह शक्तियाँ जिन्हें प्रकृति ने मनुष्य को दिया है, के साथ साथ कुछ वैज्ञानिक आविष्कारों के बारे में आपको बतादें जिनका उल्लेख आगे चलकर उपरोक्त संदर्भित तथ्यों की व्याख्या करने में किया जायेगा।

किसी भी वस्तु का नियंत्रण तीन प्रकार से अलग-अलग अथवा मिश्रित रुप से किया जा सकता है। पहला सीधे भौतिक रुप से वस्तु के नजदीक रहकर नियंत्रण करना अर्थात वस्तु के पास सीधे ही उसके सम्पर्क में रहकर, दूसरा कहीं दूर से ठोस अथवा तरल माध्यम को प्रयोग में लाकर अर्थात भौतिक रुप में किसी प्रकार का सीधा व दृश्य संबंध जोड़ कर लेकिन वस्तु से दूर रह कर तथा तीसरा विकरणों रुपी माध्यम द्वारा वस्तु से दूर रहकर (बिना किसी भौतिक सम्पर्क के) अर्थात रिमोट कन्ट्रोल/रेडियेशन द्वारा । ये तीनों प्रकार के तरीके उत्तरोत्तर तीव्रगामी एवं प्रभावी रुप से कारगर होने के क्रम में दिये गये हैं। अतः तीसरा तरीका प्रयोग में लाकर किसी भी वस्तु को तेजी से अर्थात बहुत कम समय में तथा बहुत अधिक दूरी से नियंत्रित किया जा सकता है (मंगल ग्रह पर भेजे गये सेटेलाइट को पृथ्वी से नियंत्रित किया जाता है)। प्रकृति भी अपने सभी नियंत्रण तीसरी विधि से ही संचालित करती है। इसका मतलब यह हुआ कि प्रकृति में ट्रान्समीटर एवं रिसीवर जैसी क्षमता वाले माध्यम हैं। इन सभी को मनुष्य ने भी प्रकृति से ही किसी न किसी रुप में देखकर अथवा समझ कर एक भौतिक रुप में प्रकट किया है-उदाहरण के लिये आज हम टेप रिकार्डर, रेडियो व टेलीविजन अथवा वायरलैस टेलीफोन की सुविधा का उपयोग बड़ी ही आसानी से करते हैं इसका सीधा अर्थ है कि ये सभी शक्तियां प्रकृति में किसी न किसी रुप में विद्यमान हैं तथा प्रकृति इनका उपयोग सृष्टि के आटोमेटिक संचालन में करती है। हमारे वैज्ञानिकों ने इन सभी शक्तियों को अलग से एक भौतिक रुप देकर जन साधारण के उपयोग के लिये उपलब्ध करा दिया है जबकि प्रकृति ने ये सभी क्षमतायें मानव को पहले से ही दी हुई हैं तथा परोक्ष अथवा अपरोक्ष रुप से मानव शरीर में कभी-कभी बिना कोई विशेष प्रयास किये हुए इन शक्तियों/क्षमताओं के विद्यमान होने का ऐहसास कुछ विशेष लोगों को हो जाता है, लेकिन साधारणतः ये क्षमतायें गुप्त रहती हैं तथा जो विशेष प्रयास करते हैं उन्हीं को परोक्ष रुप में इनकी प्राप्ति हो पाती है।

विज्ञान ने काफी समय पूर्व ही यह प्रमाणित कर दिया है कि इस संसार की प्रत्येक वस्तु जीवित अथवा मृत, जड़ अथवा चेतन, अपनी प्रकृति के अनुसार एक आवृति रखती है। प्रत्येक व्यक्ति महसूस करता है कि कुछ विशेष लोगों को पहली बार देखने पर अथवा मिलने पर ही लगता है, जैसे कि वह उसके बहुत नजदीक हैं या परिचित हैं अथवा उनमें अपनापन सा लगता है। यह सब दोनों की प्राकृतिक आवृति के मेल खाने पर ही होता है अन्यथा कुछ लोगों से एक बार मिलने के बाद दोबारा मिलने की इच्छा ही नही होती है। इसका मतलब यह हुआ कि प्रत्येक मनुष्य की प्राकृतिक आवृति होती है जो कि उसकी विभिन्न प्रकार की सोच एवं कार्यप्रणाली तथा उसके गुण-दोष इत्यादि के आधार पर निर्धारित होती है।

उपरोक्त के अतिरिक्त विज्ञान का यह तथ्य भी किसी से छिपा नहीं है कि प्रत्येक वस्तु अपने किसी एक रुप में अथवा एक ही तरह की अवस्था में एक निश्चित समय तक ही रह सकती है अर्थात् समय के साथ-साथ प्रत्येक वस्तु का रुप एवं अवस्था बदलती रहती है तथा वह एक अवस्था से किसी दूसरी ऐसी अवस्था में भी परिवर्तित हो सकती है जिसमें कि उसकी अवस्था से पूर्व किसी भी प्रकार की समानता होने का अनुमान आसानी से नहीं लगाया जा सकता है। एक अवस्था में यदि किसी वस्तु का कोई एक विशिष्ट गुण प्रदर्शित होता है तो दूसरी अवस्था में उसका वह गुण पूर्णतः विलुप्त हो सकता है तथा कोई और दूसरा गुण परिलक्षित हो सकता है। यही प्रकृति की परिवर्तन शीलता अथवा Aging factor के नाम से जाना जाता है तथा प्रकृति की इस प्रक्रिया से सभी को गुजरना पड़ता है। मनुष्य भी अपनी विभिन्न अवस्थाओं को प्रकृति के इसी नियम के अन्तर्गत प्राप्त करता है। विज्ञान की भाषा में इसका सीधा अर्थ यह बनता है कि कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता है लेकिन समय के साथ उसका रुप एवं गुण इस प्रकार से भी बदल सकते हैं कि बदले हुए रुप में उसके पुराने रुप को नहीं पहचाना जा सकता है। शायद आत्मा की व्याख्या भी हमारे पूर्वजों ने इसी सिद्धान्त के अर्न्तगत अजर व अमर रुप में की है।

उपरोक्त वैज्ञानिक तथ्यों को संक्षेप में परिभाषित करते हुए पुनर्जन्म से संबंधित विभिन्न पहलूओं की निम्नानुसार स्पष्ट व्याख्या की जा सकती है।

1. प्रत्येक मानव शरीर की उसकी प्रकृति के अनुसार एक विशिष्ट आवृति होती है।
2. प्रत्येक मानव शरीर में एक ट्रान्समीटर तथा रिसीवर रहता है, जोकि मनुष्य द्वारा सोची हुई, कही हुई एवं उसकी प्रत्येक क्रिया के अनुसार उसकी आवृति में हुए परिवर्तनों को (अथवा उसके एम्पलीटयूड के रुप में हुए परिवर्तन) परिलक्षित करके ट्रान्समिट करता रहता है, जिसकी रिकार्डिग मानव मस्तिष्क में भी होती रहती है तथा यह सूचना प्रकृति में कहीं उपलब्ध कोई ऐसा माध्यम, जोकि मैग्नेटिक टेप की तरह कार्य करता है, उस पर भी होती रहती है।
3. प्रकृति में किसी माध्यम में रिकार्ड की गयी सूचना का नियंत्रण मानव मस्तिष्क में लगे हुए ट्रान्समीटर द्वारा ही होता है जिससे कि उसका कहीं और ट्रान्सफर न होना अथवा किसी और के मस्तिष्क में ट्रान्सप्लान्ट न होना, नियंत्रित होता रहता है।
4. समय के साथ -साथ पूर्व में रिकार्ड की गयी (बाल्यकाल) सूचनायें मानव मस्तिष्क में तथा प्रकृति के माध्यम से विलुप्त होती रहती हैं तथा किसी विशेष समय के उपरान्त उनका पूर्ण अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है अर्थात् वह ऊर्जा के किसी और रुप में परिवर्तित होकर पूर्ण रुपसे अपने पूर्व रुप एवं अवस्था से भिन्न/अलग हो जाती है। यह समय अलग-अलग लोगों के लिये अलग-अलग हो सकता है, जोकि आयु पूर्ण करने पर, जब व्यक्ति की प्राकृतिक मृत्यु होती है, उसे कहा जा सकता है।
5. समय के साथ् साथ रिकार्ड होने वाली सूचनायें (अधिक उम्र में जो सूचनायें रिकार्ड होती हैं) काफी कमजोर होती जाती है इसलिए उतनी ही जल्दी विलुप्त भी हो जाती हैं। अतः क्रम सं0 4 पर अंकित तथ्य यह दशाते हैं। कि पूर्ण

आयु प्राप्त करने पर मृत्यु के बाद न तो इन्सान का शरीर ही बचता है तथा न ही प्रकृति के माध्यम में Recorded सूचनायें ही शेष बचती है। ऐसी स्थिति में उसके पुनर्जन्म के लिये ऐसी कोई सूचना नहीं बचती है जिससे पुनर्जन्म जैसी घटना परिलक्षित हो सके । इसलिये ऐसा कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति अपनी वृद्धावस्था के उपरान्त प्राकृतिक मृत्यु को प्राप्त करता है वह इस जीवन व मृत्यु के चक्र से मुक्ति पा जाता है। कुछ योगी पुरुष जो मानवी एवं कुछ प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं वह योग शक्ति द्वारा अपने इस जन्म से संबंधित सभी सूचनाओं को समाप्त करते हुए प्राणायाम से अपने प्राण त्याग देते हैं। ऐसी स्थिति में उनके पुनर्जन्म होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है तथा न ही ऐसी कोई घटना प्रमाण के रुप में सामने आयी है।

6. किसी व्यक्ति की अकाल मृत्यु होने पर उसका शरीर व मस्तिष्क में लगा ट्रांसमीटर (जिसमें प्राकृतिक माध्यम में रिकार्ड हुई सूचनाओं को नियंत्रित करने की क्षमता होती है) समाप्त हो जाता है, जिससे वह सूचना स्वतंत्र रुप से Move करने एवं समान परिस्थितियों के मिलने पर किसी जन्म लेते हुए बच्चे के मस्तिष्क में Transplant होने के लिये स्वतंत्र होती है। यदि वह सूचना समय रहते उचित माध्यम एवं परिस्थितियों को पाकर Transplant हो जाती है, जिसकी संभावना अत्यधिक कम होती है, तो वह बच्चा आगे चलकर अपने पूर्व जन्म के बारे में बताने लगता है अन्यथा समय के साथ-साथ वह सूचना अपना अस्तित्व खो देती है।

7. यदि कोई व्यक्ति किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करता है तो उस व्यक्ति का मानसिक स्तर, सोचने व कार्य करने का ढंग, प्राप्त की गयी शिक्षा से संबंधित सूचनायें मस्तिष्क में उपलब्ध मैमोरी में जिस प्रकार से रिकार्ड हुई होती हैं, उसी प्रकार का हो जाता है। उस व्यक्ति से वार्ता करने वाला दूसरा व्यक्ति यह महसूस कर सकता है कि वास्तव में यह व्यक्ति एक अमुख प्रकार की शिक्षा प्राप्त किये हुए है। लेकिन अभी हमारे विज्ञान ने इतनी अधिक प्रगति नहीं की है कि हम कोई विशेष ज्ञान मानव मस्तिष्क में, जिस तरह कम्प्यूटर में, फ्लापी, डिस्क या अन्य साधनों से, बड़ी से बड़ी सूचनायें पलक झपकते ही उसकी मेमोरी में स्टोर करा देते हैं उसी प्रकार तुरन्त ही मानव मस्तिष्क में मन चाही सूचनायें स्टोर करा दें तथा थोड़े से समय में ही इन्जीनियरिंग, डाक्टरी या अन्य विशेष ज्ञान को अलग-अलग मानव मस्तिष्क में स्टोर कराकर उन्हें विशेषज्ञ बना सकें। शायद हो सकता है कि भविष्य में विज्ञान इतनी प्रगति करले तथा उपरोक्त प्रक्रिया आगे चलकर मानव मस्तिष्क को विकसित करने में स्तेमाल की जा सके। लेकिन प्रकृति में ऐसा होना संभव है। अकाल मृत्यु प्राप्त व्यक्ति से संबंधित सूचना जब माँ के गर्भ में पलते हुए अथवा जन्म लेते हुए बच्चे के मस्तिष्क में उपरोक्त प्रक्रिया द्वारा प्रवेश कर जाती है तो बच्चे के बड़े होने पर वह उन सूचनाओं को समझने लगता है तथा 4-5 वर्ष का होने पर अपने परिवारजनों को वही सूचनायें/जानकारी देने लगता है। चूंकि वह सूचनायें वास्तविक होती है इसलिये जांच-पड़ताल के बाद पूर्वजन्म से संबंधित सभी घटनायें सच निकलती है जिससे कि वह बच्चा किसी व्यक्ति विशेष का पुनर्जन्म है, इस बात का पूर्ण विश्वास हो जाता है।

8. जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि जब बच्चा कुछ बड़ा हो जाता है तो वह अपने पुनर्जन्म से संबंधित घटनाओं को भूलने लगता है तथा उसे कुछ याद नही रहता है। इससे ऐंसा प्रतीत होता है कि जो सूचनायें उसके मस्तिष्क में प्रवेश करती हैं वह काफी Strongly recorded नहीं होती हैं अथवा उन सूचनाओं में समय के साथ- साथ क्षीणता आती है जिससे वह मैमोरी में Permanently Store नही हो पाती हैं तथा कुछ वर्ष के उपरान्त धीमे-धीमें मैमोरी से विलुप्त हो जाती है। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि अकाल मृत्यु के जो कारण होते है उनमें से काफी प्रकरणों में कोई दूसरा व्यक्ति दोषी हो सकता है अतः यदि बच्चा अपने पुनर्जन्म के बारे में बताते हुए उस व्यक्ति के बारे मे भी सूचना देता है (मुझे मेरे पूर्वजन्म में अमुख व्यक्ति ने मारा था इत्यादि) तो बच्चे के माता-पिता उसके जीवन को पुनः खतरे की आशंका से बचाने के लिये बच्चे पर बार-बार दबाव डालते रहते हैं कि वह इस तरह की पूर्वजन्म की बात किसी से न करें। अतः दबाव की मनोदशा में रहते हुए कुछ ही वर्षो में बच्चा पुनर्जन्म से संबंधित सूचनायें भूल जाता है।

9. अकाल मृत्यु प्राप्त व्यक्ति की प्राकृतिक माध्यम में रिकार्ड हुई सूचनाओं को यदि लम्बे समय तक उपयुक्त वातावरण एवं परिस्थितियां नहीं मिलती हैं तो वह धीमे-धीमे समय के साथ उस माध्यम से विलुप्त हो जाती है तथा फिर

ऐसे मामलो में उस व्यक्ति से संबंधित पुनर्जन्म की घटना देखने को नहीं मिलती है।

10. पुनर्जन्म में लिंग परिवर्तन न हो सकने का कारण भी संबंधित सूचना के Transplant होने के लिये उपयुक्त परिस्थितियां एवं वातावरण एक समान होने की आवश्यकता से जुड़ा हुआ है। जैसे किसी भी व्यक्ति का खून किसी और व्यक्ति को तभी दिया जा सकता है जब उन दोनों के खून के ग्रुप में समानता पायी जाये। उसी प्रकार प्राकृतिक माध्यम में रिकार्ड हुई सूचनाओं में व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक एवं लिंग संबंधी विशेष सूचनायें अवश्य रहती है जिनका मेल होने पर ही संबंधित बच्चे के मस्तिष्क में वह सूचनायें Transplant हो सकती हैं। इनमें लिंग का समान होना भी एक अनिवार्यता होगी। इसके अतिरिक्त सूचना Transplant होने के लिये समानता में इतने पैरामीटर्स होते हैं जिनका साधारणतः समान पाया जाना असंभव सा ही होता है जिस प्रकार इस पृथ्वी पर सभी प्रकार से एक समान दो व्यक्तियों का मिलना लगभग असम्भव ही है, यहां तक कि एक ही बार में जन्म लेने वाले दो बच्चों में भी काफी असमानतायें होती हैं। इसलिये पुनर्जन्म की घटनाओं की संभावना भी लगभग नगण्य होती हैं।

अतः उपरोक्त तथ्यों से यह प्रतीत होता है कि प्रकृति में साधारणतः पुनर्जन्म की व्यवस्था नहीं हैं अन्यथा हमें पुनर्जन्म की घटनायें अधिक से अधिक संख्या में देखने को मिलती जैसे कि प्रकृति में साधारणतः घटने वाली घटनाओं की पुनरावृति देखने को मिलती है। लेकिन यदि किसी घटना के घटने की आवृति नगण्य है तो इसका यही अर्थ निकाला जा सकता है कि कुछ विशेष परिस्थितियों के होने पर ही वह घटना घटती है अन्यथा साधारणतः वह नहीं होती है। इसी प्रकार प्रकृति में पुनर्जन्म की घटना के लिये भी कुछ विशेष परिस्थितियों की अनिवार्यता है जिनका पूर्ण होना लगभग असंभव सा होता है। इसी लिये हमें पुनर्जन्म की घटनायें अत्यधिक कम होती नजर आती हैं।

यहां कुछ विज्ञान के दृष्टाओं द्वारा यह कहा जा सकता है कि प्रकृति में ऐसी बहुत सी घटनायें हैं जिनकी आवृत्ति बहुत कम है लेकिन फिर भी उनका घटित होना एक सच है। इस विषय पर मेरा यह कहना है कि उन घटनाओं की आवृत्ति कितनी भी कम हो लेकिन फिर भी गणना के योग्य है, जैसे कोई घटना 10-20 वर्ष में या 100-200 वर्ष में या 10,000-20,000 वर्ष में एक बार घटती है तब भी उसका प्रतिशत गणना के योग्य है लेकिन जो घटना करोड़ों में से एक बार होती है उसका प्रतिशत नगण्य ही माना जायेगा। फिर भी यहां पुनर्जन्म की घटना होने के बारे में कोई संदेह नहीं है, लेकिन यह घटना किन कारणों से एवं कैसे होती है तथा सभी पर लागू होती है अथवा नहीं एवं हमारी वर्तमान मान्यतायें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कितनी खरी उतरती हैं, इसके बारे में सोचने की आवश्यकता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि पुनर्जन्म के बारे मे ज्यादातर धर्मों में ऐसा होने की व्यवस्था क्यों दी गयी है। हिन्दू धर्म में सीधे-सीधे यही बताया गया है कि मरने के उपरान्त पूर्वजन्म में किये गये कार्यो के अनुसार पुनर्जन्म होता है तथा पुनर्जन्म की घटना ठीक उसी प्रकार है। (आत्मा शरीर बदल लेती है) जैसे कि हम लोग एक कपड़ा जर्जर होने पर दूसरा नया कपड़ा बदल लेते हैं। उसी प्रकार ईसाई एवं मुस्लिम धर्मो में भी एक खास अवधि के उपरान्त मृतक व्यक्ति के लेखे-जोखे का हिसाब होने के उपरान्त उसे फिर Heavan या जन्नत, प्राप्त होती है इत्यादि । इसके बारे में यह स्पष्टीकरण दिया जा सकता है कि सभी प्राणियों में मानव मस्तिष्क अधिक विकसित होने के कारण तथा जीवित अवस्था में भी काफी क्षमतायें एवं प्राकृतिक शक्ति का मालिक होने के कारण मानव अपने अस्तित्व को समाप्त होते सहन नहीं कर सकता है। वह ये स्वीकार नहीं कर पाता कि मरने के उपरान्त उसका कोई अस्तित्व ही नहीं रहेगा। इसलिये अपनी मानसिक शान्ति के लिये एवं सामाजिक व्यवस्था को स्वतः ही नियंत्रित हो सके, इसलिये हमारे विभिन्न धर्मो के विद्वान पूर्वजों ने पुनर्जन्म की व्यवस्था धर्मों में दी है। यदि किसी प्रकार मानव यह मान ले कि मरने के उपरान्त उसका कोई अस्तित्व ही नहीं रहेगा तो उसे एक मानसिक आघात तो लगेगा ही, साथ ही साथ इस मानव जीवन में ज्यादा से ज्यादा आनन्द उठाने के चक्कर में अधिकतर शक्तिशाली लेकिन कम बुद्धि वाले व्यक्ति इस प्रकार के कार्यों में लिप्त हो जायेंगे

कि सामाजिक व्यवस्था चरमरा जायेगी। जबकि यह मानने पर कि इस जन्म में गलत कर्म करने पर अगला जन्म उसी के अनुसार मिलता है अधिकतर व्यक्तियों की दुष्टावृति किसी सीमा तक स्वतः ही रुक जाती है तथा एक मानसिक शान्ति भी रहती है कि मृत्यु के उपरान्त हमारा अस्तित्व समाप्त नहीं होता है बल्कि जर्जर शरीर को बदल कर हम पुनः नये शरीर को प्राप्त हो जायेगें तथा हमारा अस्तित्व बना रहेगा।

यदि उपरोक्त तथ्य उचित प्रतीत नहीं होते हैं तो यह सोचने की बात है कि कार्य एक शरीर करता है (आत्मा निर्रलिप्त एवं निर्विकार रुप से शरीर में रहती है तथा उसका शरीर द्वारा किये गये अच्छे अथवा बुरे कार्यों से कोई वास्ता नही होता है) तो दंड उसी शरीर को प्राप्त होना चाहिये जिसने गलत कार्य किये हैं। फिर मृत्यु के उपरान्त दूसरा शरीर जिसने कुछ किया ही नहीं कष्ट क्यों भोगे? यहां कुछ लोग जीव व आत्मा दोनो को अलग-अलग मान लेते हैं लेकिन जीव अलग से क्या है-इसकी कहीं भी वैज्ञानिक व्याख्या उपलब्ध नहीं है बल्कि आत्म को ही कहीं जीवात्मा तथा कहीं जीव एवं आत्मा अलग-अलग कह दिया गया है।

उपरोक्त विषय बड़ा ही गूढ है एवं इसकी वैज्ञानिक व्याख्या भी उतनी ही जटिल है। मैने उपरोक्त विवरणानुसार वैज्ञानिक व्याख्या करने का एक प्रयास किया है जो कि किसी स्तर तक सच भी हो सकता है तथा गलत भी। वास्तविक स्थिति तो समय के साथ-साथ मानव के समक्ष प्रकृति द्वारा ही कभी न कभी अवश्य सामने आयेगी क्योंकि प्रकृति के रहस्य भी तभी प्रकट होते है जब प्रकृति किसी व्यक्ति विशेष को इतनी बौद्धिक शक्ति प्रदान करे जिससे कि वह उसके किसी विशिष्ट रहस्य को समझ कर जनसाधारण के उपयोग के लिये उसका स्पष्ट व्याख्या दे सके, अन्यथा प्रकृति तो रहस्यों से भरी पड़ी है। हमें प्रकृति जिस रुप में दिखायी देती है वास्तव में वह वो नहीं होती है तथा काफी गहराई में जाकर उस वस्तु को समझने का प्रयत्न करने पर ही उसका वास्तविक रुप प्रकट होता है । इसलिये पाठकों से मेरा अनुरोध है कि वह उपरोक्त विवरण को जानकर उस पर गम्भीरता पूर्वक वैज्ञानिक मनः स्थिति में मनन करें न कि किसी धर्म विशेष अथवा किसी व्यक्ति विशेष से प्रभावित होकर कोई प्रतिक्रिया देने का कष्ट करें। फिर भी यदि कोई पाठक इस विषय पर अपने अमूल्य सुझाव अथवा सूचनाये देना चाहता हो तो उसका स्वागत है।

****